International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF: 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 1; Issue 2; December 2015; Page No. 75-77

जायसी की अलंकार–योजना

डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

जायसी अपनी अनोखी काव्य शैली एवं ठेठ अवधी के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होने पद्मावत में बडी सहजता से साहित्यिक विशेषताओं से अपने महाकाव्य को भर दिया है। अलंकार निरूपण, शब्द शक्तियों, काव्य गुणों एवं बिम्बों की रचना से पद्मावत सुन्दर रचना बन गया है। उनके काव्य की अन्य विशेषताओं के इलावा अलंकार योजना अलौकिक है। उनका विरह वर्णन रहस्यभावना की अभिव्यक्ति तो गुण हैं ही परन्तु इसके अतिरिक्त अलंकार योजना भी अद्वितीय है।साहित्य में अलंकारों का महत्व सर्वाधिक होता हे। अलंकार के महत्व को अनेक विद्वानों ने पहले ही महत्व पूर्ण कहा है। भारतीय काव्य शास्त्र में अप्रस्तुत योजना तथा अलंकार विधान को लेकर दीर्घ विवाद की परम्परा देखी जा सकती हे। भामह,उद्भट्ट आदि आचार्यों ने अलंकार को साधन न मान कर साध्य रू‍प में स्थापित करने का प्रयास किया। आचार्य वामन भले ही रीतिवादी आचार्य थे, परन्तु उन्होंने अलंकारों को अनिवार्य मानते हुए कहा– सौंदर्यम् अलंकारः। आगे चलकर जयदेव ने अलंकारों का जोरदार समर्थन किया और कहा कि अलंकारों के बिना काव्य की कल्पना नहीं की जा सकती।

अंगी करोति यः काव्यं शब्दार्थवनलंकृति।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृति।।

रीतिकाल में अलंकार को आचार्य केशवदास ने अतिमहत्वपूर्ण प्रमाणित कियाऔर स्पष्ट ही कह दिया–
भूषण बिनु विराजई कविता बनिता मित्त।
आधुनिक विद्वानों में आचार्य रामचन्द्र शुक्लने अलंकार का महत्व प्रतिपादित करते हुए स्पष्ट किया किअलंकार साधन है साध्य नहीं। इस तरह अलंकार के महत्व को किसी न किसी ढंग से अनेक विद्वानों ने स्वीकार अवश्य किया है।
पद्मावत मूलतः अपने आप में अन्यार्थपरक कथा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे समासोक्ति काव्य कहा हें इसमे कवि ने प्रस्तुत अर्थात् रत्नसेन–पद्मावती के माध्यम से अप्रस्तुत अर्थात् आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यंजना की है। डॉ मनमोहन गौतम ने भी पद्मावत को समासोक्ति अलंकार का बृहद् संस्करण कहा है।कवि ने कथानक के अनेक भावात्मक स्थलों अथवा पात्रों के क्रियाकलापों का वर्णन करने के लिए अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है। इस तरह कवि ने प्रकृति के उपमानों को ग्रहण किया हे। जायसी ने अन्य अलंकारों की तुलना में सादृश्य मूलक अलंकारों का अधिक प्रयोग कियाहे। कुछ उदाहरण देखिए–

उत्प्रेक्षा अलंकार

जायसी ने उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग बडी ही सुन्दरता से अलंकार प्रवीण कवि की तरह किया है–

नासिक देखि लजाउ सुआ । सूक आइ बेसरि होइ उआ।
बिहंसत हंसत दसन तस चमकै , पाहन उठे झरक्कि।
दारिवं सरि जो न कै सका ,फटिउ हियो दरक्कि।

इसी तरह उत्प्रेक्षा अलंकार के विभिन्न भेदों का भी प्रयोग उनके काव्य में मिलता हे। उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद है–वस्तु उत्प्रेक्षा उसका प्रयोग उनकक काव्य में देखा जा सकता है। एक उदाहरण देखिए–

वस्तु उत्प्रेक्षा– पहिरे खुंभी सिंहल द्वीपी। जानहु भरी कचपची सीपी।
कंचन रेख कसौटी कसी, जनु घन मांह दामिनी परगसी।

इसी तरह उत्प्रेक्षा का दूसरा भेद फलोत्प्रेक्षा है, उसका भी प्रयोग पद्मसवत मे मिलता है।

फलोत्प्रेक्षा

पहुप सुगंध करहि एहि आसा, मकु हिरकाइ लेइ हम पासा।
देखि अमिय पस अधरन्ह, भएउ नासिका कीर।
पवन वास पहुंचावै, अस रम छांइ न तीर।

इसी तरह रूपक अलंकार भी जायसी के काव्य पद्मावत में सहज ही दिखाइ देता हे। जायसी ने न केवल रूपक अलंकार का ही प्रयोग किया अपितु उसके उपभागों का भी भलीभान्ति प्रयोग कर यह प्रमाणित किया है कि उन्हें अलंकार प्रयोग में सिद्धहस्तता प्राप्त थी।कुछ प्रयोग देखिए–

रूपकअलंकार

ग्गन सरोवर, ससि कुवल, कुमुद तराई पास।
तूं रवि उवा जो भंवर होइ, पवन मिला लै बास।
जोवन चांद उवा अस, विरह भएउ संग राहु।
छप्तहि छप्त नवीन भा, काहै नपारौ काहु।
मुहमद जीवन जल भरन, रहट घरी की रीति।
घरी सो आई ज्यों भरी, ढरी जनम का बीति।

उपरोक्त उदाहरण में कवि ने रूपक उसके भिन्न भिन्न भेदों सांग, निरंग, और परंपरित रूपक का खुल कर प्रयोग किया है अन्यत्र भी इसी प्रकार के प्रयोग रूपक अलंकार के देखे जा सकते हैं।

रूपक और रूपकातिशयोक्ति

एक काव्यखण्ड में जायसी ने यौवन पर अप्रस्तुत वस्तु जल का आरोप किया है। परन्तु दूसरी पंक्ति में रूपकातिशयोक्ति के सहारे श्लेष द्वारा भंवर अर्थात् काले केश की बात की है।उदाहरण देखिए–

जीवन जल बिन–दिन जस घटा, भंवर छपान हंस परगटा।

व्यतिरेक

जायसी ने व्यतिरेक अलंकार का भी प्रयोग पद्मावत में किया हे–

नसिक खरग देउं केहि जोगु। खरगोखीन होहिबदन संजोगु।
रवि परभातु तात, वह जूडी। का सरवर बहि देउं मंयकू।
चांद कलंकी, वह निकलंकू औ चांदहि पुनि राहु गरासी।.....

इसी तरह अन्य अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग जायसी के काव्य पद्मावत में मिलता है।

दृष्टान्त अलंकार– इस अलंकार का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

अब हौं मरौं निसांसी, हिए न आवैं सांस।
रोगिया की को चाले वैदहिं जहां उपास।

जायसी ने ऐसा कोई अलंकार नहीं है जिसका प्रयांग पूरे अधिकार के साथ न किया हो। एक अन्य अलंकार अर्थान्तरन्यास का उदाहरण देखिए–

अर्थान्तरन्यास
मिलिहहि बिछुरे साजना, अंकम भेंट गहत।
तपनि मृगसरा जे लहहिं, ते अद्रा पलुहन्त।
जिन्ह घर कन्ता ते सुखी, तिन्ह गारो औ गर्व।
कंत पियारा बाहिरै, हमस`ख भूला सर्व।
रकत ढरा मांसु गिरा, हाड भयउ सब संख,
धनि सारस होइ ररि मुई, पीउ समेटहि पंख।

निदर्शना अलंकार
जेहि दिन दसन ज्योति निरमई, बहुतै जोति जोति ओहि भई।
रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती, रतन पदारथ मानिक मोती।
जहं जहं विहंसि सुभावहिं हंसी, तहं तहीं छिटकि जोति परगसी।
इसी तरह विनोक्ति का एक उदाहरण इस प्रकार से है;

विनोक्ति
जगज ल बूडि जहां लगि ताकी, मोरि नाव खेवक बिने थाकी।
अन्य अलंकारों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

भ्रम अलंकार
चकई विधुरि पुकारै, कहां मिलै हो नाह।
एक चांद निसि सरग मह, दिन दूसर जल मांह।

अत्युक्ति अलंकार
टूटमणै नव मोति फटे, मने दस कांच।

अतिश्योक्ति अलंकार
उन बानन अस को जो न मारा। बेधि रहा सगरौ संसारा।
गगन नखत जाहिं न गनै। है सब बान ओहि के हनै।

विभावना अलंकार
नैन नाहिं पै सब कुछ देखा। कवन भांति अस जाइ विसेखा।
जीभ नाहिं पै सब किछ बोला। तन नांहि जो डोलाब सो डोला।

दीपक अलंकार
परिमल प्रेम न आछै छपा।

असंगति अलंकार
चा उझा मुंह दिया अकासा।

इसी प्रकार भ्रंतिमान अलंकार का भी उदाहरण देखिए
भ्रांतिमान अलंकार
चकई बिछुरि पुकारे, कहा मिली हौ नांह।
एक चांद निसि सरग महं, दिन दूसर जल मांह।

ठसके अतिरिक्त जायसी ने अनेक ऐसे अलंकारों का भी भरपूर प्रयोग किया है जो काव्य में अतिशय चमत्कार उत्पन्न करते है। इनके कुछ उदाहरण देखिए–

श्लेष अलंकार
पद्मावति सब सखी बोलाई। जनु फुलबारि सबै चलि आई।
कोई चम्पा कोई कुंद सहेली। कोई सुकेत करना रस बेली।
कोई सु गुलाल सुदरसन राती। कोइ बकौरि बकुचन बिहंसाती।
चलै सबै मालति संग, फूले कमल कमोद।
बेधि रहे गन गंध्रप, बास परिमलामोद।

जायसी नेअर्थालंकारोंके अतिरिक्त कुछ शब्दालंकारों का भी सुन्दर प्रयोग किया है। कुछ स्थलों पर उन्होंने शब्दालंकारों का इतन सुन्दर प्रयोग किया है कि कोई भी उन्हें अलंकार प्रवीण कह सकता है। कुछ उदाहरण देखिए–

क अनुप्रास अलंकार
1. सोरह सहस घोड घोडसारा।
2. पपिहा पीउ पुकारत पावा।

ख यमक अलंकार
1 गई सो पूजि मन पूजि न आसा।
2 रसनहिं रसनहि एकौ भावा।

इस तरह यह प्रमाणित होता है कि जायसी चाहे अधिक पढे लिखे न थे परन्तु फिर भी उन्हें काव्य शास्त्र का अच्छा ज्ञान था यही कारण है कि उन्होंने उपमानों का प्रयोग करते हुए परम्पराओं का ही अनुगमन किया है। उनकी अप्रस्तुत योजना बे मिसाल थी।उन्होने एक से बढ कर एक अलंकार योजना का निर्माण किया है।कुछ स्थानों पर कवि ने अपनी मौलिकता का भी परिचय दिया है।
आचार्य रामचन्द्र ने जायसी की अलंकार योजना पर कुछ आपत्तियां उठाईं हैं। उनका मतहै कि जायसी ने ललित भावनाओं की अभिव्यक्ति में ऐसी भावनाओं का चित्रण किया है जिसमे चित्र विभत्स रूप धारण कर गए हैं जो ललित भावनाओं के अनुकूल नहीं हैं। एक उदाहरण से यह स्पष्ट होजाएगा–

विरह सरागन्हि भूंजसि भासू
रि ढरि परहिं रकत कै मांसू।
हिया काढ जनु लीन्हेसि हाथा,
रुधिर भरी अंगुरी तेहिं साथा।

शुक्ल जी की टिप्पणी कुछ सीमा तक सही है परन्तु जायसी का वर्णन विहारी की तरह उहात्मक भी नहीं लगता। सम्भवतः कवि का उद्देश्य चमत्कार उत्पन्न करना ही नहीं अपितु अनुभूति का तारतम्य प्रस्तुत करना है तथा संवेदना को सजीव करना है। जायसी की रचना शैली पर फारसी प्रभाव होने के कारण हिन्दी आलोचकों को उनकी यह अभिव्यक्ति अखरती है।स्पष्ट है जायसी के विरह वर्णन पर फारसी प्रभाव हैतथा शुद्ध भारतीय पद्धति पर आधारित ग्रंथ नहीं है।
टाचार्य दूसरी आपत्ति यह करते हैं कि जायसी ने कुछ स्थलों पर औचित्य का निर्वाह नहीं किया है। श्रृंगार रस निरूपण में वीर रस

की साम्ग्री और वीर रस में श्रृंगार रस की सामगी की मिलावट हो गई है जो साहित्यिक नियमों के विरुद्ध है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि जायसी ने यह रचना भारतीय पद्धति के अनुसार नहीं कह न ही उनका यह उद्देदश्य ही था वैसे सूरदास ने भी रति युद्ध का वर्णन लगभग ऐसा ही किया है। निस्सन्देह प्रत्येक रचना में शास्त्रीय दृष्टि से कोइै न कोई त्रुटि होती ही है फिर भी कहना होगाा कि मसनवी शैली में भी जिस तरह उन्होने भारतीय काव्य शास्त्र एवं दर्शन को बिना चोट पहुंचाए यह रचना की है यह उनका अद्भुत प्रयास कहा जाएगा।

संदर्भ सूचि

1. जायसी ग्रन्थावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 87
2. पद्मावत्
3. उत्तर भारत की संत परंपरा–आचार्य परशुराम चतुर्वेदी पृ 45
4. जायसी ग्रन्थावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 124
5. उपरोक्त – पृ 87 ; 67
6. जायसी ग्रंथावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 65
7. उपरोक्त – पृ 19
8. उपरोंक्त – पृ 78